

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा को केन्द्र में रखना

अज़ीम प्रेमजी स्कूल कलबुर्गी

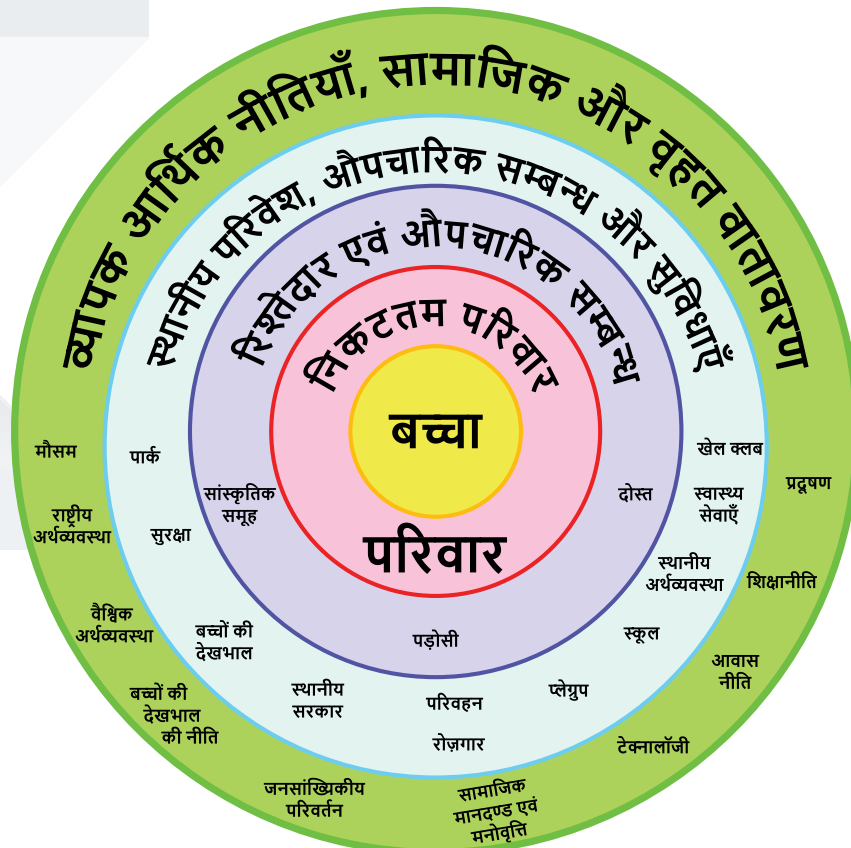
फ़रज़ाना बेगम

सामाजिक-भावनात्मक बुद्धिमत्ता बच्चों में अन्तर्निहित होती है। सामाजिक-भावनात्मक बुद्धिमत्ता की क्षमता हमें स्वयं को व्यक्त करने, दूसरों को समझने, बदलाव स्वीकार करने और हर दैनिक ज़रूरतों, चुनौतियों और दबावों का सामना करने के लिए तैयार करती है। स्कूलों में सामाजिक-भावनात्मक बुद्धिमत्ता से परिचय बच्चों के नैतिक मूल्यों पर दीर्घकालिक प्रभाव डालता है, साथ-ही-साथ उनकी शैक्षणिक प्रगति को भी बेहतर करता है।

पालकों के लिए लचीले और सामाजिक व भावनात्मक रूप से समझदार बच्चों का पालन करना चुनौतीपूर्ण है। सामाजिक-भावनात्मक कौशल को विकसित करने के लिहाज़ से जन्म से पाँच वर्ष तक का समय बच्चे के मस्तिष्क के लिए अहम होता है। बच्चे की आजीवन प्रगति और सफलता काफ़ी

हद तक इस अवधि के दौरान बच्चे को मिले व्यवहार (या गुण) (जेनेटिक) और पालन-पोषण (देखभाल, पोषण, प्रेरणा, माहौल और शिक्षण) पर निर्भर करती है। स्कूल को, जहाँ बच्चा अपने प्रारम्भिक जीवन के लगभग 15 वर्ष बिताता है, बच्चे के सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए पर्याप्त समर्थन और अवसर देना चाहिए।

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा में कई पहलू शामिल होते हैं जैसे आत्मभान (मैं कौन हूँ?), आत्म प्रबन्धन (मुझे क्या करना चाहिए? कैसे करना चाहिए?), जिम्मेदार निर्णय (क्या सही है? क्या ग़लत है? क्या अच्छा है या क्या बुरा है?), सामाजिक जागरूकता (स्वयं की पहचान, दूसरों की पहचान), सम्बन्ध कौशल (देखभाल, मान, सहानुभूति और समानुभूति)। इन पहलुओं में दक्षता विद्यार्थियों को नैतिक और तर्कसंगत बनाती है। इसलिए स्कूल में शिक्षक को प्रत्येक बच्चे को



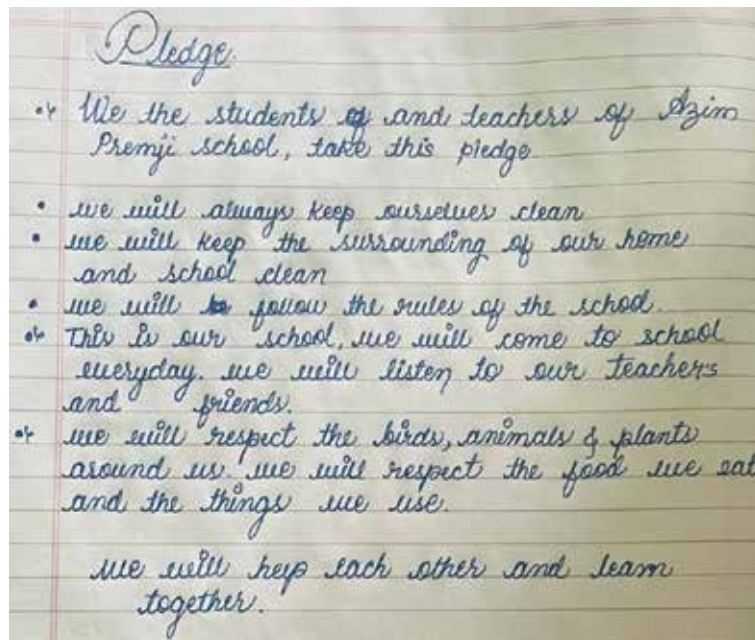
चित्र-1 : ब्रॉफेनब्रेनर (1979) के पारिस्थितिकी मॉडल के आधार पर जोएल गिब्स (Joel Gibbs) का बनाया चित्र।

समझने के लिए और उनकी मदद करने के लिए मिलकर काम करना होगा। यहाँ कुछ अन्य हितधारक भी होते हैं जो इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसा कि युरी ब्रोफेनब्रेनर (Urie Bronfenbrenner) ने पारिस्थितिकी मॉडल में उल्लेख किया है।

स्कूल एक छोटा समाज होता है। हमारे स्कूल में, हम शिक्षक सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और विकास को प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों की दिनचर्या में विभिन्न गतिविधियाँ शामिल करते हैं। एक कक्षा में बच्चे शिकायत करते हैं, रोते

हैं, चिढ़ाते हैं, लड़ते हैं और एक-दूसरे को परेशान करते हैं। सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा उन्हें अपनी भावनाओं को पहचानने और प्रबन्धित करने में मदद करती है। शिक्षक के रूप में हम उन्हें सकारात्मक लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करते हैं जो सहानुभूति रखने, दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने और जिम्मेदार निर्णय लेने के महत्वपूर्ण सामाजिक-भावनात्मक मूल्य पर आधारित होते हैं।

हम उनके अनुभवों, घटनाओं और जीवन के खास मौकों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सिर्फ महान व्यक्तियों



चित्र-2: शिक्षक और विद्यार्थी सुबह एक साथ प्रतिज्ञा लेते हुए कि हम अपने आसपास के हर व्यक्ति और वस्तु का सम्मान करेंगे।

की कहानियाँ पढ़ने-सुनने की बजाय हम अपने जीवन की कहानियाँ साझा करते हैं। हम बच्चों के लिए सुरक्षित और महफूज माहौल बनाकर उन्हें देखभाल और शारीरिक और भावनात्मक सहजता देने की कोशिश करते हैं ताकि वे अपने विचारों और मतों को व्यक्त कर पाएँ और उनकी मुश्किलों और परेशानियों को साझा कर पाएँ। हम प्रत्येक विद्यार्थी की ज़रूरत और स्थिति के आधार पर उनसे संवाद करते हैं। हम स्कूल परिसर में धर्मनिरपेक्षता का अभ्यास करते हैं, सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं और सभी को समान अवसर देते हैं।

हम अज़ीम प्रेमजी स्कूल के विद्यार्थी और शिक्षक यह प्रतिज्ञा लेते हैं —

- हम खुद को हमेशा साफ़-सुथरा रखेंगे।
- हम अपने घर और स्कूल के आस-पास साफ़-सफ़ाई रखेंगे।



चित्र-3 : कक्षा में प्रवेश के वक्त विद्यार्थियों का खुशी-खुशी स्वागत करती शिक्षिका।

- हम स्कूल के नियमों का पालन करेंगे।
- यह स्कूल हमारा है, हम रोज़ स्कूल जाएँगे। हम अपने शिक्षकों और दोस्तों की बात सुनेंगे।
- हम अपने आस-पास के पक्षियों, जानवरों और पौधों का आदर करेंगे। हम अपने भोजन और उपयोग की जाने वाली चीज़ों का आदर करेंगे।
- हम एक-दूसरे की मदद करेंगे और साथ मिलकर सीखेंगे।

स्व-भान और सामाजिक जागरूकता

आनन्दमय माहौल बनाने के लिए शिक्षक विद्यार्थियों के साथ मज़ेदार गतिविधियों जैसे नृत्य (डांस), एक्शन प्ले में शामिल होते हैं। हम विद्यार्थियों से गले लगकर, हाई-फाईव्स देकर या अभिवादन के किसी ऐसे तरीके से मिलते हैं जो उन्होंने दिए गए विकल्पों में से चुना था। हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि उनका दिन कैसा बीत रहा है, वे कैसा महसूस कर रहे हैं और कुछ भावनाओं को वे क्यों महसूस कर रहे हैं आदि। बच्चों को आत्मबोध और आत्मप्रेरणा की ओर उन्मुख करने के लिए उनके टेस्ट लिए जाते हैं। टेस्ट के बाद उनके हल किए हुए पेपर उन्हें वापस दे दिए जाते हैं ताकि वे देख सकें कि उनका प्रदर्शन कैसा रहा, वे और क्या कर सकते थे, उन्हें क्या बेहतर करने की ज़रूरत है। यह उन्हें उनकी अगली परीक्षाओं के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करता है।

स्व-प्रबन्धन

भावनाओं के प्रबन्धन का मतलब भावनाओं को दबाना नहीं है, यह स्वस्थ भावनात्मक स्वास्थ्य का संकेत है। कक्षा-2 की एक लड़की की बोटल खो गई थी। वह ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। यह उसके खुद को अभिव्यक्त करने का वह तरीका था जो उसने सीखा था। अब इस स्थिति से निपटने की ज़िम्मेदारी शिक्षक की थी। ऐसी स्थिति में, शिक्षक को बच्चे की भावनाओं को नियंत्रित करने और समस्या का समाधान खोजने में मदद करनी चाहिए। इस मामले में, शिक्षिका ने सबसे पहले बच्ची का रोना बन्द कराने में मदद की। फिर बोटल की तलाश शुरू की और बोटल ढूँढ़ निकाली। ऐसा करते हुए, शिक्षिका ने उस बच्ची को और अपनी कक्षा के बाक़ी सभी बच्चों के सामने यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि जब कोई समस्या आए तो रोने की बजाय यह सोचना चाहिए कि उस समस्या का समाधान कैसे किया जाए।

ज़िम्मेदारी की भावना

कक्षा-6 और 7 के विद्यार्थियों ने अपने शिक्षक की मदद के बिना विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों के संचालन में सहयोगी और सहकारी रूप से काम करना सीखा। 5 सितम्बर यानी शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों ने शिक्षकों के

लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया था। जब उन्हें मालूम चला कि सभी नियोजित कार्यक्रम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं बचा है तो वे घबराए नहीं बल्कि उन्होंने कुछ गतिविधियाँ हटाकर स्थिति को समझदारी से सम्भाला और कार्यक्रम को समय पर समाप्त किया। यह समय के साथ उनके अभ्यास और सहभागिता के द्वारा उनमें विकसित हुई परिपक्वता और धीरता का संकेत था।

विद्यार्थी नेतृत्व वाली समितियाँ, जिनमें चर्चा और मीटिंग भी होती हैं और विद्यार्थी अपने विचार, मत और आईडिया व्यक्त करते हैं, विद्यार्थियों में अपनेपन की भावना और जुड़ाव पैदा करने के अलावा ज़िम्मेदारी की भावना को भी बढ़ावा देती हैं। यह विशिष्ट रूप से आशावादी शाला संस्कृति विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है, जहाँ विद्यार्थी अपनी महत्ता समझते हैं और सम्मानित महसूस करते हैं।

ज़िम्मेदार निर्णय लेना

स्कूल में विभिन्न समितियाँ और समूह हैं। इन्हें जोशीला और जीवन्त बनाने लिए विद्यार्थियों को सुझाव देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे अरविन्द नाम का लड़का है जो फ़ाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमैरीसी (FLN) समूह में है, वह गणित में काफ़ी अच्छा प्रदर्शन करता है लेकिन अँग्रेज़ी विषय में उसका प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं था। जब उसके अँग्रेज़ी में कम अंक आए तो उसकी अँग्रेज़ी शिक्षक ने उसे टेस्ट पेपर पर

क्लास टीचर के हस्ताक्षर करवाने के लिए कहा। क्लास टीचर ने उसके साथ बातचीत की कि वह अँग्रेज़ी में भी कैसे अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। बच्चों के साथ खुलकर बात करना भी उन्हें समझने और ज़िम्मेदार निर्णय लेने में मदद करता है। उस बच्चे ने शिक्षक की बात को सकारात्मक रूप से लिया और अब वह अँग्रेज़ी कक्षा में अच्छे से भागीदारी कर रहा है।

निष्कर्ष

हमारे स्कूल में हम एक सुरक्षित और डर मुक्त माहौल बनाते हैं। जो विद्यार्थियों और शिक्षकों को एक-दूसरे के साथ और अन्य सहयोग-कर्मियों के साथ सहज रूप से संवाद करने में सक्षम बनाता है। हम एक साथ खेलते हैं, अपनी खुशी और ग़म एक-दूसरे के साथ बाँटते हैं, अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और एक-दूसरे का साथ देते हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा सिर्फ़ विद्यार्थियों के जीवन को सफल और सन्तोषप्रद बनाने के लिए महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह उनकी शैक्षणिक सफलता के लिए ज़रूरी है। सीखने के एक सकारात्मक और सहयोगी माहौल का बढ़ावा देकर और आवश्यक संसाधन और सहयोग देकर हमारा स्कूल यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहा है कि विद्यार्थियों में ऐसे सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकसित हों जो सफल जीवन के लिए ज़रूरी हैं।

*बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।

Endnotes

- i Housing Children: South Auckland, The Housing Pathways Longitudinal Study - Scientific Figure on ResearchGate. https://www.researchgate.net/figure/Bronfenbrenners-ecological-model-Diagram-by-Joel-Gibbs-based-on-Bronfenbrenners-1979_fig1_311843438



फ़रज़ाना बेगम कलबुर्गी, कर्नाटक के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में प्राथमिक स्कूल शिक्षक हैं। यहाँ आने से पहले वे केन्द्रीय विद्यालय, कलबुर्गी में कार्यरत थीं। उन्हें प्राथमिक कक्षाओं में ईवीएस, अँग्रेज़ी और गणित पढ़ाने का अनुभव है। उन्होंने विजयपुरा की कर्नाटक स्टेट यूनिवर्सिटी से विज्ञान (PCM) में स्नातक की डिग्री हासिल की है। किताबें पढ़ने और आउटडोर गेम खेलने में उनकी रुचि है। उनसे farzana.begum@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : एकता तुमराम पुनरीक्षण : प्रतिका गुप्ता कॉपी एडिटर : अनुज उपाध्याय